लालकिले से स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर
राष्ट्र के नाम संदेश

दिनांक: 15:8:63

बिरादरानेवतन, भाइयो, बहिनों और बच्चों और सैनिकों,

आप फिर हम यहां जमा हुए है, हमारे आजाद हिन्द की सोलहवीं सालगिरह पर, मुबारिक दिन है और आप सब लोगों को मुबारिक हो। आप में से बहुतों को याद होगा, कि जब 16 बरस हुए हम पहले बार यहां लाल किले नीचे जमा हुए थे और पहले बार हमारा कौमी झंडा यहां से उड़ा था। वह दिन हम सभों की याद में रहेगा, क्योंकि उस दिन हमें एक खुशी थी, खुशी का कुछ नया नशा था, बहुत दिन बाद, बहुत कोशिशों के बाद, बहुत कुर्बानी के बाद, भारत आजाद हुआ। बहुत दिन बाद, अंधेरी रात खत्म हुई और उजाला होने लगा। हमने बहुत खुशी मनाई थी यह समझ के कि अब हमारे मुसीबत के दिन खतम हुए और अब हम अपने मुल्क को बनायेंगे। उसके थोड़ें ही दिन बाद हमें एक जबर्दस्त धक्का लगा जबकि हिन्दुस्तान के दो टुकड़े होने पर एक हंगामें मचे, हौलनाक बातें हुई पाकिस्तान में और सरहद के इस पार, नई सरहद के इस पार हिन्दुस्तान में, बहुत जबर्दस्त धक्का लगा हमें, सख्त, सब को रंज हुआ। लेकिन फिर भी हमने उनका सामना किया और हल्के हल्के उस पे काबू आये। उसी जमाने में थोड़े दिन बाद हमारे एक बड़े नेता महात्मा गांधी जी की हत्या हुई, एक हिन्दुस्तानी की हाथ से। उससे बड़ी सजा हमें कोई नहीं मिल सकती थी, वह मिली। लेकिन फिर भी हमने सोचा कि इस वक्त वह हमें

क्या सलाह देते, महज हाय हाय करने की नहीं, बल्कि मुकाबला करने की उन गलत चीजों की, गलत ताकतों की, गलत विचारों की और ख्यालात की जो ऐसी बातें मुल्क में कर देता है और मुल्क को जो तबाह कर दे । हमने और मैंने, हम कहता हूं उस में आप सब शामिल हैं, हमने उसका मुकाबला किया और उन विचारों को भी कुछ दबाया । एक नई हवा फिर से हिन्दुस्तान में हूई और हमने सोचा कि अब सारी शक्ति हम डालें इस हिन्दुस्तान को बनाने में, नया भारत बनाने में खुशहाल भारत बनाने में और जिससे सब लोग उठें और भारत की शक्ति बढ़े। इधर हमने ध्यान दिया और बड़े बड़े नक्शे योजनायें बनाई, उस पर काम किया और कर रहे है 10-12 बरस से । मेरा ख्याल है और में समझता हूं आप भी इससे स्वीकृत होगे कि इस 10-12 बरस में हिन्दुस्तान की शक्ल बदली है और बदलती जती है । दोनों हमारे लाखों गांवों में किसी कदर शहरों में नये नये शहर बने, हजारों नये कारखाने बने, नई योजनाये हुई और अगर इधर उधर फिर के आप देखें तो कुछ पहले के मुकाबले में खुशहाली नजर आती है । बहुत दूर है हम अभी तक अपनी मंजिल से लेकिन यह बात हुई है । यह तो बात हुई लेकिन हमारा ध्यान कुछ एक बुनियादी बातों की तरफ से हट गया है । हम समझें कि हम आजाद हो गये हैं तो अब आजादी हमारी पक्की है और हम गफलत कर सकते है और कोई हमारे ऊपर इस आजादी पे हमला करने वाला नहीं है । अभी तक हमने यह सबक नहीं सीखा था पूरी तौर से कि आजादी ऐसी चीज नही है कि जो अपने आप से पक्की रहती है, यह नहीं ख्याल हमें हुआ था कि आजादी की खिदमत हमेशा करनी होती है, हर साल दिन और रात करनी होती है और जिस वक्त गफलत हुई तब आखें उधर से हट जाती है उस वक्त वह फिसलने लगती

है और खतरे में आने लगते है । हम गफलत में पड़ गये ।

हमने अपने को एक अमलदार बनया अमन का, शांति का, दुनियां में शोहरत हुई हिन्दुस्तान शांति के लिए है, ठीक बात थी, हम शांति के लिए थे और अब भी है, लेकिन शांति के साथ कमजोरी नही चलती है, शांति के साथ गफलत नहीं चलती शांति के साथ मेहनत चलती है और शक्ति चलती है तब उसकी हिफाजत हम कर सकते है और हमारी आवाज की कोई ताकत हो दुनियां में ।

आपने पार साल फिर यकायक आप और हम सब को एक धक्का लगा जब कि हमारी सरहद पर हमला हुआ, एक मुल्क जिसको हम दोस्त समझते थे उसने जोरों से हमला किया और हाल से हुए सरहद पर, लम्बी सरहद पर । हमें तकलीफ हुई, । लेकिन उसका भी नतीजा एक अच्छा हुआ, वह यह कि उसने हमें गफलत से निकाला और सारे मुल्क में एक नई हवा फैली नई हवा चली और लोग एक तैयार होने लगे और हर तरफ एक जोश था और एक कुर्बानी की जाती थी, त्याग किया जा रहा था मुझे याद है अब भी और आप तो जानते ही हैं, कि किस तरह से लोगों ने खास और हमारी आम जनता ने उस समय महीनों कि किस तरह से लोगों ने खास और हमारी आम जनता ने उस समय तक , अपनी हर चीज को उनके पास थी देने के लिए तैयार हो गये, पैसे दिये, हमारे कोष मे सोना चांदी सब कुछ दिया और सब से ज्यादा उन्होने दिया जिन के पास सब में कम था । और यकायक हिन्दुस्तान भर में ।ताकियां। हिन्दुस्तान भर में, एक हवा फैली जिसमें लोग अपने आपसी झगड़े भूल गये उनको पीछे कर दिया था, छुपा दिया था , दबा दिया था और सब लोग महसूस करते थेकि अब हमारा देश खतरे में है तो उसका अव्वल काम हमारा उसका सामना करने का है, उस की मदद करना और खतरे का सामना करना है । एकता की

हवा फैली और हमने देखा कि बावजूद उमर के नाईत्तफाकियों के ऊपर की बहस के बुनियादी तौर पर सारे देश में कैसी जबर्दस्त एकता है जो कि वक्त आने पर निकल आती है, हमारी हिम्मतें बढ़ी, ताकत बढ़ी और हमने कोशिश की कि मुल्क को जल्दी से जल्दी तैयार करें, उसकी ताकत बढ़ायें । क्या माने हैं मुल्क को तैयार करने के ? खाली लोगों का जोश बहुत जरूरी है, लेकिन काफी नहीं है क्योंकि फौजी तैयारी कितनी जरूरी हो उसके पीछे हजार और तैयारियां होती है उसके पीछे सामान बनाने की तैयारियां कारखाने बनाने जो फौजी सामान देते है, जो हवाई जहाज बनायें उनके पीछे और हजारों कारखाने । उसके पीछे हिन्दुस्तान के बेशुमार खेती , जहां खाना पैदा होता है, खाने का सामान वगैरह । यानी उस तैयारी के माने हैं कि हर तरफ से काम हो, हर एक आदमी अपना फर्ज अदा करे और हर तरफ से काम हो , हर एक आदमी अपना फर्ज अदा करे और ज्यादा से ज्यादा पैदा करें, जिससे हमारी आर्थिक हालत मजबूत हो । उधर ध्यान गया और तरक्की हुई और होती जाती है । लेकिन फिर भी कुछ पुरानी हमरी गफलत की हालत होने लगी, क्योंकि लड़ाई जरा कुछ ठंडी सी हो गई थी कुछ दिन लोग भूलने लगे उसे जो पहले जरूरी था आपस में इत्तेहाद और एकता होना । अब फिर अपनी पुरानी बहस., पुराने झगड़े पैदा करने लगे और एक हवा पैदा करने लगे मुल्क की कमजोरी की बजाये मुल्क की ताकत की । बदकिस्मती से यह कुछ हमारी पुरानी आदत है और जरा मौके से हम उसे भूल गए थे जब खतरा बिल्कुल सामने नजर आया, फिर इधर उधर हम जाने लगे । लेकिन आप सब जानते हैं कि खतरा हर वक्त हमारी सरहद पर है, सरहद के इस पार है और हमारा मुल्क हमारे मुल्क का आप का और हमारा पहला काम है कि उससे

हम मुल्कको बचायें । उसके बाद फिर और बातें होती है जो देश अपनी आजादी को, अपनी जमीन को बचा नहीं सकता उस की कदर दुनियां में कौन करें और उसकी ताकत क्या है तरक्की करने का ?

इसलिए हालांकि सब में बड़ा काम हमारा इसवक्त है मुल्क की ताकत को बढाना, मुल्क की, पैदावारको बढाना, मुल्क की गरीबी को निकालना और खुशहाल मुल्क को करना हर एक को बराबर का मौका मिले तरक्की करोड़ों आदमियों ने जो हिन्दुस्तान में रहते है, हमारे बाल बच्चों को पूरा मौका मिले कि अच्छी तरह से बढ़े सब चीजें उन्हें मिलें, अच्छी हमारे देश की सेवा करें, बढ के । लेकिनयह तब काम उसी वक्त हो सकते हैं, जब मुल्क की इज्जत, मुल्क की आजादी कायम है अगर उसमें ढील हो गई तो मुल्क का दिल टूट जाता है. कमर टूट जाती है और मुल्क निकम्मा हो जाता है । तो कभी कोई मुल्क जो आजाद है और आजाद रहनाचाहता है वह इसको, मुल्क की हिफाजत को अव्वल रखता है और बातें सब पीछें हैं । और मुल्ककी हिफाजत के लिए एक ऐसी बात है जिसमें दो बहसें नहीं होनी चाहिए, बहस की जरूरत है, वो आवाजों की जरूरत नहीं है । हर एक हिन्दुस्तानी जो हिन्दुस्तानी है, भारतीय है उस की एक ही राय होनी चाहिए और अगर एक राय है तो उस बात में उसको यह जानना चाहिए कि उसको मिले के हमें कहना है, मिल के हमें कहना है कि हमारे मुल्क की एकता सब में ज्यादा जरूरी है । यह नक्शा हमने देखा था पार साल इस साल के शुरू में अपने मुल्क की एकता का जोरों कानक्शा और छोटी बातों को पीछें कर देना । लेकिन कुछ दिन तक वह बात सरहद ठंडी रही तो लोगों को याद जरा कम होती है, फिर उसे भूलने को फिर से वह छोटे मोटे झगड़े पैदा होने लगे फिर से

अलग अलग आवाजें, अलग अलग नुक्ताचीनी होने लगी । यह अफ्सोस की बात है क्योंकि हर एक को हक है कि नुक्ताचीनी करें, हर एक को हक है कि बहस करें, हमारा आजाद मुल्क है, हम किसी को रोकते नहीं हैं । लेकिन हर एक को हक होने का अलावा, फर्ज भी होते हैं, कर्तव्य होते है और कर्तव्य पर ध्यान न दें वह अपने हक पर कैसे ध्यान दे सकते हैं । उसका कर्तव्य है उसका फर्ज है हर एक का मुल्क को बचाना, मुल्क की एकता रक्षा और मुल्क की ताकत बढ़ाना, मुल्क की सेवा करना यह फर्ज हर एक हिन्दुस्तानी के हैं, चाहे कोई उसका मजहब हो, कहीं भी हिन्दुस्तान के हिस्से में रहता हो । इसको जहां हम भूलें तब हमारे जो हक है वह ढीले पड़ जाते है, उनका मॉगना कुछ जोरों से नहीं हो सकता . हक तो हर एक के हैं और उन्होंने चाहिए बहुत कुछ हक है लोगों के, हमारे लोगों के जो इस वक्त पूरी तौर से चल नहीं सकते है, हक है हर एक इंसान को हिन्दुस्तान में कि वह खुशहाल जिन्दगी बसर करें, उसकी गरीबी निकले जाये उसको गरीबी का बोझा न हो और हर तरह से तरक्की करने का उसको उसके बच्चों को मौका मिले । कोशिश कर रहे है इसकी ओर, हम उम्मीद करते है कि वक्त आयेगा और हल्के हल्के ज्यादा से ज्यादा आयेगा । लेकिन वाक्या यह है कि इसवक्त तो हम दूर है उस मंजिल से और उसपर हम जभी पहुचेंगे जब हमारे फर्ज हम अदा करें सब ।

आप से मैंने कहा कि मुल्क कि मुल्क - खतरे में है मेरा मतलब नहीं कि इस वक्त खासकोई खास बात होने वाली है । लेकिन यह जो कोई तस्वीर हमारे सामने आई है, उसने ऐसे नए खतरे पैदा किये है हमारी सरहदोंपर जो कि हम भूल से गये थे और उन खतरों का सामना करने के लिए हम वहां फौजें, हवाई जहाज भेजें वह रूका है । लेकिन खाली फौज और हवाई जहाज मुल्कों की रक्षा नहीं कर सकता है । आजकल मुल्कों की रक्षा होती है जब सब लो, सब जनता मर्द और औरत सारे मुल्क के

कुछ न कुछ न करें इस रक्षा के काम में । क्योंकि रक्षा के पीछे सारे देश की शक्ति होनी चाहिए और देश की शक्ति में सब में पहला काम है कि एकता, मिलकर काम करना, मिलकर जो बड़े बड़े तैयारियां है उसको करना खेती में या कारखाने में या जहां कहीं आप काम करते हैं, लोग तैयार हों, उस के लिए और मुल्क की ताकत इस तरह से बढ़ायें और उसके बाद इसका नतीजा होगा कि आपकी जो फौजी ताकत है वह भी मजबूत हो जायेगी और तरह से हमारी शक्ति बढ़ेगी । तो यह आप याद रखें हमारे बड़े सवाल हैं, बड़े सवाल हैं यो भी बड़े सवाल थे हमारी योजनाओं के, अब बहुत बढ गये हैं यह जो खतरा है, दुनिया अजीब है बदलती जाती है दुनियां में एक तरफ से बड़े खतरे हैं, रहते हैं, बड़ी लड़ाई होने के, जिसमें एटम बम हाइड्रोजन बम चलें, दूसरी तरफ से कुछ हवायें भी चलती हैं ।

अभी, अभी, एक सुलेहनामे पर दस्तखत हुए मास्कों में, एटम बम के सिलसिले में । जिसमें अमेरिका ने, रूस वालों ने और अंग्रेजों ने दस्खत किये और और लोगों ने भी दस्खत किये हैं, बाद में हमारे मुल्क ने भी दस्खत किये । वह सुलेहनामा कोई लड़ाई का डर नही निकाल देता, हमारे खतरों को कम नहीं करता, लेकिन फिर भी एक रास्ता दिखाता है जिधर चल के शायद हम ऐसी जगह पहुंच जाये, दुनियां पहुंचें जब कि लड़ाई वगैरा काबू में आ जाये और दुनियां शांति की थी यूनाइटेड नेशन्स में, जिस पर दस्खत हुए मास्को में । पहली आवाज हिन्दुस्तान की उठी थी इस बात को करने के लिए । तो हमें खास तौर से खुशी है कि अब उस पर अमल हुआ, वह बात की गई और हम उम्मीद करते है कि इस रास्ते पर कदम बढाया गया है तो बढ़ता ही जायेगा और दुनियां आखिर में इस खतरे से बच जायेगी । हम रहते है एक खतरनाक दुनियां में जिसमें खतरे है, जिस में उम्मीदें हैं और आजकल के नौजवान है जो बच्चे है

उनके सामने जो जिन्दगी है उसमें भी दोनों बातें मिली हुई हैं. उम्मीदें है और खतरे हैं । अच्छा है कि ऐसे जमाने में हम रहते हैं, क्यों ऐसे ही जमाने में रह के एक कौम मजबूत होती है, एक कौम में हिम्मत आती हैं, बहुत आरामतलबी किसी कौम के लिए अच्छी नहीं होती, कमजोर कर देती हैं, । बहुत, डर वक्त हमें चौकन्ना होना है । तो मैं आप को और खास कर नौजवानों को और बच्चों को मुबारिक करता हूं कि ऐसे जमाने में वह हैं और उनके सामने बहुत इम्तहान होंगे, हम सब के सामने। और वह इम्तहान ज्यादा बड़े होते हैं बनिस्बत इसके जो स्कूल और कालेज में जा के दिया करते है । जिन्दगी के इम्तहान ज्यादा सख्त है, ज्यादा बड़े है । और कोई किताब एक पढ़ के आप उसमें पास नहीं हो जाते हैं, उस इम्तहान में. बल्कि आपका चरित्र ऐसा होना है, आपका दिल और दिमाग ऐसा होना चाहिए मजबूत कि आप किसी खतरे का भी सामना कर सकें, और उस पर हावी आये , घबरायें नही । तो हमें इस तरह से चलना है और जो आइन्दा सवाल आते हैं, और हमारे आजाद हिन्द की उम्र कुछ बढ़ती जाती है तो उसके साथ हमें भी ज्यादा मजबूत होते जाना है और गफलत में कभी अपने को नहीं पड़ने देना है । और यह याद रखना है कि चाहे हमारी राय कितनी, दो हो, तीन हो, सौ हो, एक बात में राय एक ही है वह हिन्दुस्तान की एकता और हिन्दुस्तान की हिफाजत करना और हिन्दुस्तान को खुशहाल बनाना । इसमें दो राय कोई नहीं हो सकती हैं । हां कुछ राय हो सकती है कि रास्ते किधर जाने के हैं, लेकिन बुनियादी राय तो इन तीनों बातों की एक होनी चाहिए और हर कदम को हम उठायें, हर बात जो हम करें हम सोचें कि इस बात के करने से हिन्दुस्तान की हम खिदमत करते हैं, हिन्दुस्तान की एकता बढ़ाते है, हिन्दुस्तान की रक्षा करने की जो बाते हैं उसमें हम मदद करते हैं, या उन को कमजोर करते हैं, । यह एक छोटी कसौटी है जो हमें लगानी

(110)

चाहिए हर बात पर । क्योंकि हम अक्सर अपने जोश में मस्त रहते हैं और पार्टी बाजी या टलबंदी में पड़ के कमजोर कर देते हैं मुल्क के रास्ते को मुल्क के कदम उठाने को रक्षा करने के लिए । इन बातों को आप याद रखिए । जो आगे दिनों में वह हमारे कोई आसान दिन नहीं है, मुश्किल दिन है किसी तरफ से भी आप देखिए मुश्किल दिन है, कठिन दिन है।

जब हमारे सामने यह बड़ा हादसा हुआ था, खतरा आया था सरहद पर, उसके बादहमें कई बातें करनी पड़ी जो कि हमें अच्छी नहीं लगती थी, लेकिन हम मजबूर होगये करने को । हमें फौज पे बहुत ज्यादा रूपया खर्चना पड़ा, करीब दुगना, दुगने से भी ज्यादा शायद । हमें उस रूपये को टैक्स वगैरह के जरिये से जता करना था, टैक्सेज बढ़े टैक्स बढाना किसी को अच्छा नहीं लगता न देने वालो को, न बढाने वालों को । लेकिन जब मुल्क खतरे में हो तो फिर जो लोग 2-4 पैसा बचाने को मुल्क के खतरा को भूल जाते हैं, वह मुल्क की खिदमत नही करते हैं, उनकी वह सेवा नहीं हुई बल्कि ऐन वक्त पर पैसे की क्या कीमत है । मुल्क हमारा एक चीज है जो रहेगा, पैसा आता है जाता है, हम खर्च करेंगे, पैदा करेंगे और उस वक्त जो जबाव इसका हुआ, हर जगह हमारी पार्लियामेंट मे और मुल्क में वो जोरों का हुआ, हर जगह हमारी पार्लियामेंट में और मुल्क में वो जोरों का हुआ, शान का, हुआ हालांकि तकलीफ थी और परेशानी थी, फिर भी मंजूरी का हुआ क्योकि उस समय एक बात और परेशानी थी, हिन्दुस्तान पे खतरा आया और उस खतरे से बचाना है, हर तरह से बचाना है चाहे जो भी कुछ देना हों, चाहे जेा कुछ भी तकलीफ हो, चाहे हम मिट जायें लेकिन हिन्दुस्तान रहे (तालियां)। इस तरह से देखा हमने और वो बातें चली। सोना, चांदी आया, पैसा आया टैक्स हुए आये । तो इस बात को आप सोचिये यह सवाल हमें देखना खाली नहीं है कि कोई

(111)

चीज बाजातेखुद अच्छीहै या नहीं बल्कि देखना है कि आजकल की हालत में, आजकल के खतरे में चाहें सरहद पे हो, चाहे अंदरूनी खतरा हो, किस तरह से उसका सामना करना है, अगर उस के सामने मेंकरने में हमें ज्यादा बोझा उठाने हैं, तो हमें बोझे उठाने हैं। आप जानते हैं कि जब बड़ी लड़ाइयां होती है तो कितनी जबर्दस्त बोझे जनता को उठाने पड़ते हैं, तबाह हो जाते है मुल्क। हमारे सामनें इस वक्त ऐसी लड़ाई नहीं है कोई कह नहीं कसता कल आइन्दा हो लेकिन उसको दूर करने के लिये भी इस वक्त हमें तैयार रहना है, होना, हैं।और बोझे उठाने हैं।

हम, हमारा नाम दुनियां में हुआ था कि हम एक शांति पसन्द, अमन पसन्द, हम एक शांति प्रिय देश हैं और यह बात सही है और इस वक्त जो हम अपनी फौजें बढ़ाते हैं, और नौजवानों को कुछ सिखाते हैं फौजी का, इसके माने नहीं है कि हम अपनी शांति के विचार और शांति की नीति छोड़ दी हैं, हम उस पर चलेंगे, दुनियां में चलेंगे और हर जगह चलेंगे और जो झगड़ा हमारा है किसी देश से, अगर वह शांति से तय हो जाते है तो जरूर कोशिश करेंगे। क्योंकि हमें पसन्द नहीं है इस किस्म की लड़ाई जो मुल्क में तबाही लाये और आम जनता जिसमें बहुत परेशानी हो। लेकिन शांति जभी हो सकती है, खुद्दारी से, शांति हो सकती है। स्वाभिमान से और एक गलत बात के सामने सिर झुका देने से नही और डरने से नही। जो लोग डरते है वह मुल्क कों कमजोर कर देते है, बदनाम कर देते हैं इसलिए हालांकि हम तैयारी करें पूरी तौर से मुल्क की रक्षा की, हमारा पथ, हमारा रास्ता शांति पे चलने को होगा और हर वक्त हम ढूढेंगे दुनियां में और अपने मुताबिक कि जब कभी शांति से कोई फैसला हम कर सकते हैं तब उसकोपकहेंगे, लेकिन शांति से फैसला हो,

II

लेकिन ऐसा नहो जिसमें हिन्दुस्तान की शान को धक्का लगे। यह जरूरी बात है और इसलिए हम उसकी तैयारी करेंगे पूरी तौर से और उस तैयारी के माने खाली तोप और बंदूक और फौज नहीं हैं, उस तैयारी के माने मुल्क में एक एक शख्स, एक एक मर्द, एक एक औरत, लड़का इसके लिए कुछ न कुछ दें, तैयार हो अपने दिल को मजबूत करें अपने दिमाग को मजबूत करें और साथ मिल कर चलना चाहिए। हमारे मुल्क के बहुत कर साथ चलना भी आता है। पैर मिला के चलने में कोई खास खूबी नहीं है लेकिन वह एक साथ काम करने की तस्वीर है। फौज की क्यों ताकत है, वह लोग मिल के काम करते है, पैर मिला कर चलते हैं, सब काम मिल कर करते है उनमें डिसिप्लेन है, नियम से करते है। यह शक्ति है। तो हमें अपने देश को कुछ सिपाहीपना सीखाना है सारे देश को, हमें अपने देश को डिसिप्लेन सिखाना है और शायद यह जो खतरे आये है उन से हम फायदा उठासकें, इन बातों को सखिा के और सीख रहा है मुल्क। अच्छा है इस तरह से हम तैयार हों अपने आइन्दा के भविष्य के लिए और इस खतरे को निकाल कर, जब निकालेंगे तो ज्यादा ताकतवर निकलेंगे। ज्यादा हिम्मत होगी। ज्यादा हमें अपने ऊपर भरोसा होगाऔर खुशहाली केरास्ते पर हम आसानी से चल सकेंगे। आखिर में में मुल्क वही मजबूत होते है जो अपने ऊपर भरोसा कर सकें, जो औरों पर भरोसा करें, औरों से दोस्ती होती भरोसा अपने ऊपर होता है, औरों से सहयोग होता है, आप ने दिमाग से सोचा होता है, अपने हाथों से काम करना होता है। जिस वक्त कोई मुल्क इसकोभूल जाता है और घबरा जाता है डर, जाता है अपने ऊपर भरोसा नही करता है, वह गिर गया, तबाह हो गया, जलील हो गया, निकम्मा मुल्क है वह, यह बात आपको याद रखनी है, और अगर हिन्दुस्तान ऐसा

ऐसा बड़ा मुल्क उससे ज्यादा जिल्लत क्या हो सकता है कि हम अपने अपने दिलों में डर जाये. घबरा जायें और अपने ऊपर भरोसा न कर सकें, हमें करना है और हमारे दोस्त हैं, दुनियां में उन से हमें दोस्ती करनी है, उन से हाथ मिलना है, उन से मदद भी लेनी है वह ठीक है और दी है मदद हमें बड़े बड़े देशों ने उन से हम मशकूर है, मशकूर महज मदद के नहीं है बल्कि उनकी हमदर्दी के हैं, हमदर्दी कीमती चीज है और दुनियां के बहुत देशों ने हमें दी हैं । इसलिए इससे हमारा बोझा कम हो जाता है । तो वह तो ठीक है लेकिन और फिर भी जिस मंजिल पर हम चलें जो यात्रा हम कर रहे है उस पर हमें यात्रा करनी है और लोग नही मंजिल पर पहुंच पायेंगे । यह बात याद रखनी हैं और आपको उसी उसूल से — हम चाहते है कि मुल्क को बढ़ायें, तरक्की करें मुल्क की, सारी आर्थिक समस्याओं को हल करे अपने ऊपर भरोसा कर के औरों की मदद ले के और अपने मुल्क को ऐसा बनाये अपनी टांगों पर पूरी तौर से खड़ा हो सके वो आइन्दा चाहे । क्योंकि मै देखता हूं बड़े बड़ो की तो खैर फिक्र है ही लेकिन बच्चे जो हमारी करोड़ों है देश में और जो मै खुद होता हूं देखकें अब रोज ब-रोज स्कूल अधिक से अधिक स्कूल जाते हैं, सीखते है यह हमारे सुन्दर बच्चे है यह कैसे बड़े -कैसे हिन्दुस्तान में रहेंगे । मै चाहता हूं उनको पूरे मौके मिले, बढ़ने का सीखने का, देश की सेवा करने का, अपनी सेवा करने का और ऐसा हम भारत बनाये जिसमें उनको ऐसे मौके मिलते हैं और कोई अंध नीच न हो हम देश में और बराबर का मौका सभों को मिले । ऐसा हम चित्र देखते हैं भविष्य का, ऐसे भविष्य के लिए हम काम करते है ।

हमारी योजना कमीशन है और लोग बड़े बड़े दफ्तर बना के काम करते है, लेकिन आप जानते हैं या जानना चाहिए आप को यह, काम गवर्नमेंट की तरफ से योजना कमीशन की तरफ

से तो खाली इशारे होते हैं काम तो आपको और आपको और हिन्दुस्तान के करोड़ों आदमियों को करना है । अगर वह करेंगे तब ठीक है नहीं करेंगे तो न योजना कमीशन कर सकेगा, न गवर्नमेंट कर सकेगी । अगर रक्षा का काम है तो करोड़ों आदमी करेंगे अगर योजना बनाने का काम है तो करोड़ों आदमी करेंगे कुछ लोग यहीं दफ्तर में बैठ केकरतेहैं, हमारा काम ताल्लुक रखता है हिन्दुस्तान के 45 करोड़ आदमियों से, वो 4-5 दफ्तर में बैठ के या अफ्सर इधर उधर फैले हुए कैसे करेंगे । हमें 45 करोड़ को जगाना है, उठाना है और ज्यादा से ज्यादा कुछ रास्ते की तरफ इशारा करना है, चलना तो उनको और फायदा भी उठाना उनको हैं । यह हमारे सामने तस्वीर।मेरा ख्याल है कि जो कुछ हुआ पार साल हमारे सरहदी हमले हुए यह सब अच्छा है मुल्क के लिए, बुरा नहीं है, मुल्क को बढ़ा करेगा, मजबूत करेगा, मुल्क को तैयार करेगा आइन्दा बढ़ने के लिए, अगर उससे घबरा न जाये और डर नजाये । और कोई घबराने का, डरने का कोई अंदेशा नहीं कोई वजह नहीं न ऐसी हमारी कौम बुजदिली के रास्ते पर चलना सीखी है । तो यह बात, लेकिन यह सिलसिला लंबा है और उसके लिए हमें तैयार रहना हैं।

बस फिर से मै आपको आज सोलहवीं सालगिरह के लिए मुबारिक देता हूं और उम्मीद करता हूं कि आप इस दिन को याद करेंगे । अभी तो आजाद हिंद एक बच्चा है सोलह बरस की उम्र क्या है एक मुल्क की, यो तो पुराना देश है हमारा, लेकिन आजाद हिंद का मै कहता हूं । ज्यों ज्यों बढ़े इसकी ताकत बढ़े इसका चरित्र अच्छा हों, मजबूती हो, सिर ऊंचा हो और ऊंचा सिर के आगे दुनियां में । इन बातों को आप याद रखिये और खासकर कि हमारे देश में जो लोग रहते हैं, जिस हिस्से में रहते हैं जो उनका धर्म है, मजहब हो, सब हमारे भाई बहिन हैं और सभों को साथ मिलकर हमें चलना है, जो इस बात को भूल जाता है वह देश की सेवा नहीं करता है । फिर से आपको मुबारिक हों ।

जयहिन्द।।